लंदन-यू.के.। ब्रिटिश पार्लियामेंट हाउस ऑफ कॉमन्स में संस्कृत युवा संस्था के चौथे 'पुरस्कार वितरण समारोह' में राजयोगी ब्र.कु. अमीरचन्द,कोऑर्डिनेर,पंजाब ज़ोन,भारत को समाज में उनके उत्कृष्ट कार्यों हेतु 'भारत गौरव अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए पार्लियामेंट से बारोनेस वर्मा, डेप्युटी हाई कमिश्नर दिनेश पटनायक, भारत गौरव अवॉर्ड के संस्थापक गणेशिया जी तथा सुरेश मिश्रा एवं रॉबर्ट जी. डेबिस,डायरेक्टर,रीच स्पोर्ट्स सिमरू लि.।

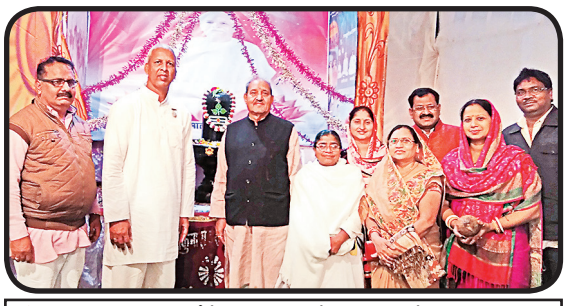

राजिम-नवापारा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में विधायक धनेन्दर साहू तथा अन्य राजनेताओं के साथ ब्र.कु. नारायण तथा ब्र.कु. पुष्पा।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क। 'त्रिदिवसीय राजयोग कोर्स' के पश्चात् समूह चित्र में जवानों के साथ बीजू पटनायक इंटरनेशनल एयरपोर्ट के डी.सी.,सी.आई.एस.एफ. वी.वी. गौतम, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. भारती तथा अन्य।

अतरौली-उ.प्र.। एस.डी.एम. अनील जी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शशी। साथ हैं ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. रोबिन तथा अन्य।

येवळा-महा.। जागतिक महिला दिन के उपलक्ष्य पर अजीत पारिख,पी.आर.ओ.,एम.एस. सी.डी.ए.,मेडिकल एसोसिएशन की ओर से 'नारी शक्ति' अवॉर्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. नीता तथा ब्र.कु. अनुराधा।

बैंगलुरु। बच्चों के लिए आयोजित पाँच दिवसीय 'समर कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अम्बिका,उपक्षेत्रीय संचालिका,वी. वी. पुरम, डॉ. रजनी पी.,डेप्युटी डायरेक्टर,मेन्टल हेल्थ,कर्ना. सरकार, बालाजी,स्कूल एडवाइज़र एवं समाजसेवी, शिवकुमार जी,स्किल डेवलपमेंट लर्निंग सेंटर तथा रघुराम जी,डेप्युटी जनरल मैनेजर,ऑपरेशन्स,नम्मा मेट्रो।

लातुर-महा.। मिनिस्ट्री ऑफ एनर्जी,महा. सरकार द्वारा आयोजित 12वें स्टेट लेवल अवॉर्ड सेरेमनी में ब्रह्माकुमारीज़ एजुकेशनल सोसायटी को एनर्जी कन्ज़र्वेशन एंड मैनेजमेंट के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यों हेतु मिला प्रथम पुरस्कार 'ई.सी. अवॉर्ड और सर्टिफिकेट'। ऊर्जा राज्यमंत्री चंद्रशेखर बावनकुले द्वारा यह अवॉर्ड और सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नंदा, प्रोजेक्ट एनर्जी ऑडिटर ब्र.कु. केदार तथा ब्र.कु. पुण्या। साथ हैं गिरीश बापट,फूड मिनिस्टर, अभय बाकरे,डायरेक्टर जनरल,ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशियंसी,नई दिल्ली तथा डॉ. विपिन शर्मा,आई.ए.एस.,डायरेक्टर जनरल,एम.ई.डी.ए.।

जैसी श्रद्धा... वैसा स्वरुप...

गतांक से आगे...

तीन प्रकार के यज्ञ कर्म होते हैं। उसमें सात्विक यज्ञ कर्म उसे कहा जाता है जिसमें फल की इच्छा न हो। जो विधि पूर्वक कर्त्तव्य समझकर निश्चयात्मक बुद्धि से होता है। वह यज्ञ सात्विक है। परंतु जो भौतिक लाभ के लिए है या दम्भ से होता है, वह यज्ञ राजसी होता है। परंतु जिसमें विधि ही नहीं है, लोक कल्याण की भावना नहीं, त्याग नहीं, श्रद्धा नहीं वह यज्ञ तामसी यज्ञ माना जाता है। इस प्रकार से तीन प्रकार के यज्ञ और फिर तीन प्रकार की तपस्यायें हैं।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

तीन प्रकार की तपस्याओं में भी एक तो शरीर सम्बन्धी तपस्या, दूसरी वाणी की तपस्या और तीसरी है मन की तपस्या। तीन प्रकार की तपस्या को स्पष्ट करते हुए उसमें सात्विक, राजसिक, तामसिक भावनाओं का स्पष्टीकरण भगवान देते हैं।

जहाँ देव, द्विज, गुरू और ज्ञानीजनों की आराधना, बाह्य शुद्धि, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा है - ये शरीर सम्बन्धी तपस्या है। जो वाक्य सच्चे हैं, प्रिय हैं, हितकर हैं, ज्ञानयुक्त हैं, मधुर हैं, वह वाणी का तप है। इसलिए कई बार दुनिया में भी कहा जाता है कि जैसी वाणी वैसा वर्ण। अर्थात् जिस क्वालिटी की वाणी मनुष्य बोलता है, उससे पता चलता है कि वह किस वर्ण का है। शरीर या जन्म से भले ही कोई भी वर्ण हो लेकिन संस्कारों से पता चलता है कि ये किस वर्ण का है। ये है वाणी की तपस्या।

परमात्मा ने वाणी के लिए कितने सुंदर दो दरवाज़े दिए हैं। एक तो जिह्वा, वह अपनी चंचलता न मचाती रहे, इसलिए उसे बत्तीस दांतों के बीच में रखा और दूसरा होठों का दरवाज़ा है। अर्थात् जो बोलें उसके पहले सोच-समझकर बोलें। साथ में तीन सिपाही दिए गए हैं कि जब भी बोलने का मन हो तो पहले सोचो, जो बोलने जा रहा हूँ वह समयानुसार उचित है। कई बोल अच्छे होते हैं लेकिन समयानुसार नहीं होते हैं। पहले ये देखो कि उचित समयानुसार ये बोल हैं? दूसरा सिपाही हमें ये कहता है कि क्या जो तुम बोलने जा रहे हो वह सत्य, मधुर और हितकर है। तीसरा जो बोलने जा रहे हो, क्या इस वक्त ज़रूरी है बोलना? अगर ये तीनों सही हैं, तो फिर भले बोलो। क्योंकि उसमें नुकसान नहीं होगा। लेकिन अगर उचित समय नहीं है, ज़रूरी नहीं है, तो बिना बोले और भी अच्छी तरह से कार्य हो सकता है। अगर वो वचन कड़वे हों, सीधे हों, हितकर न हों, कल्याण की भावना युक्त न हों और ज्ञान-युक्त न हों, तो भी कई बार बहुत नुकसान कर देते हैं। जैसे कोई भी संगीत मधुर क्यों लगता है, क्योंकि सारे वाद्य जो हैं, वह एक-दूसरे की हारमनी में बजाए जाते हैं। सुसंवादिता में बज रहे हैं, इसलिए वो संगीत मधुर हो जाता है। कानों को भी प्रिय लगता है। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

**कभी - कभी..,
''मज़बूत हाथों'' से पकड़ी हुई,
''उंगलियाँ'' भी
छूट जाती हैं...;
क्योंकि ''रिश्ते'' ताकत से
नहीं... दिल से निभाये जाते हैं...**

समय और ज़िन्दगी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हैं, ज़िन्दगी समय का सदुपयोग सिखाती है और... समय हमें ज़िन्दगी की कीमत सिखाता है।

जो अच्छा लगता है उसे गौर से मत देखो.. ऐसा न हो कोई बुराई निकल आये! जो बुरा लगता है उसे गौर से देखो, मुमकिन है कोई अच्छाई नज़र आ जाये।

रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी(म.प्र.)। सेवाकेन्द्र पर केक कटिंग कर समर कैंप का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. सीमा तथा सभी बच्चे।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएवल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।